SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

सांख्यसम्मत कैवल्य में बुद्धि तत्त्व का भूमिका

सुजन मण्डल, शोधार्थी,

मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र (संस्कृत),

कश्मीर विश्वविद्यालय, हजरतबल, श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर -190006

ईमेल-sujanrabi1691@gmail.com

शोध सारः

भारतीय दर्शन सम्प्रदायों में महर्षि कपिल प्रणीत सांख्य दर्शन को आदि दर्शन माना गया है। इस दर्शन को भारतीय शोध समाज के साथ-साथ पाश्चात्य शोध समाज में भी अभूतपूर्ण समादर मिला है। भारतीय सभी आस्तिक और नास्तिक दर्शनों का परम लक्ष्य ही है मोक्ष प्राप्त करना। सांख्य दर्शन के अनुसार त्रिविध दुःखों से ऐकान्तिक व आत्यन्तिक परित्राण पाना ही मोक्ष तथा कैवल्य है। अतः भारतीय अन्य दर्शनों की न्याय यह दर्शन भी तत्त्वज्ञान से कैवल्य प्राप्त करने का वर्णन करता है।

क्या बुद्धि किसी व्यक्ति को कैवल्य प्राप्त करने में मदद कर सकती है? अगर यह उसे कैवल्य प्राप्त करने में मदद कर सकती है, तो कैसे? इस शोध पत्र का उद्देश्य यही है । सांख्य दर्शन के मुख्य ग्रंथों तथा टिकाओं, ब्याख्याओं के समीक्षात्मक अध्ययन के आधार पर इस शोध पत्र को प्रस्तुत किया गया है।

सांख्य दर्शन में पुरुष के मोक्ष प्राप्ती में प्रकृति को सहायक रुप में दिखाया गया है परन्तु सांख्य कारिका सहित इसके सभी भाष्य-वृत्ति-टीका-टिप्पनियों के गंभीर अध्ययन से पता चलता है कि इस दर्शन में **'पुरुष बहुत्ववाद'** के साथ-साथ **'बुद्धि बहुत्ववाद'** भी सिद्ध होता है। अतः एक व अद्वितीय प्रकृति से विशेष एक पुरुष का कैवल्य प्राप्त होना सम्भव नहीं, अतएव विशेष एक बुद्धि ही विशेष एक पुरुष का कैवल्य प्राप्त करवाने में सहायता कर सकता है।

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

इस दर्शन के अनुसार कैवल्य एक प्रकिृया है-**''व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्''** अर्थात् व्यक्त, अव्यक्त एवं ज्ञ का विशिष्ट ज्ञान अर्थात् 'विवेकख्याति' से पुरुष को कैवल्य प्राप्त होता है। अतः 'व्यक्त', 'अव्यक्त' और 'ज्ञ' का विशिष्ट ज्ञान कैसे होता है, यह जानना अनिवार्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में.... दृष्टादि त्रिविध प्रमाणों के द्वारा ही दृष्ट तथा अदृष्ट सभी विषयों का स्वरुप ज्ञान सम्भव होता है और यह स्वरूपज्ञान ही 'व्यक्ताव्यक्तज्ञ' का विशिष्टज्ञान में सहायता करता है एवं त्रिविध ज्ञान प्रक्रिया में **'अध्यवसाय स्वरुप बुद्धि'** का भूमिका महत्वपूर्ण है।

संकेत शब्द: सांख्य दर्शन, दुःखत्रय, कैवल्य, बुद्धि, बुद्धिबहुत्ववाद, प्रमाणत्रय।

प्रस्तावनाः

भारतीय ज्ञान परंपरा के क्रमिक विकास से दार्शनिक साहित्य का विकास हुआ। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष - पुरुषार्थ चतुष्टय में मोक्ष की गणना सबसे अंत में की जाती है। यद्यपि धर्म, अर्थ, काम को मानव जीवन का परम उपादेय माना जाता है, ये केवल इस लोक का विषय हैं, लेकिन मोक्ष लौकिक और पारलौकिक दोनों लोकों का विषय है। अतः मोक्ष को सर्वत्र परम पुरुषार्थ के रूप में मान्यता प्राप्त है। कुछ विद्वानों का मानना है कि प्रारंभिक धार्मिक पुरुषार्थ त्रय अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष प्राप्त करने का साधन है। सांख्य दर्शन का मूल विवेच्य विषय भी परम पुरुषार्थ 'मोक्ष' को प्राप्त करना ही है-**''पुरुषार्थज्ञानमिदं गुह्यं.....''**।[i]

उद्देश्य

सांख्य के अनुसार कैवल्य की प्रक्रिया में बुद्धि की क्या भूमिका है? क्या बुद्धि किसी व्यक्ति को कैवल्य प्राप्त करने में मदद कर सकती है? अगर यह उसे कैवल्य प्राप्त करने में मदद कर सकती है, तो कैसे?- यह जानना।

शोध क्रिया बिधि

इस शोध पत्र को प्रस्तुत करने के लिए मुख्य रूप से **समीक्षात्मक शोध पद्धति** को अपनाया गया है। यह शोध पत्र सांख्य दर्शन के प्रमुख ग्रन्थों जैसे सांख्य सूत्र, सांख्य कारिका, तत्त्व समास आदि तथा इन

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

ग्रन्थों पर लिखी गई टीकाओं, टिप्पणियों, व्याख्याओं के समीक्षात्मक अध्ययन के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

मूल अंश

भारतीय लगभग सभी दर्शन सम्प्रदायों का मूल लक्ष्य है मोक्ष प्राप्त करना। भारतीय दार्शनिक चिन्तन परम्परा में मोक्ष को अपवर्ग, मुक्ति, निःश्रेयस, निर्वाण, अमृतत्त्व, प्रत्यभिज्ञा, शिवत्त्व, ब्रह्मत्त्व, जीणत्त्व प्राप्ती आदि संज्ञाओं के द्वारा अभिहित किया गया है।[ii] यद्यपि उक्त संज्ञाओं का स्वरुप भी सामान्य भिन्न-भिन्न है।[iii] सांख्य दर्शन में मनुष्य जीवन के मूल लक्ष्य तथा मुक्ति स्वरुप को **'कैवल्य'** तथा **'अपवर्ग'** कहा गया है।

सांख्य सम्मत कैवल्य का स्वरुप

भारतीय सभी दर्शन सम्प्रदायों ने मनुष्य जीवन के वर्तमान स्थिति को दुःखमय माना है।[iv] सांख्य दर्शन भी मनुष्य जीवन के वर्तमान स्थिति को त्रिविध दुःख आधारित स्वीकार किया है।[v] मनुष्य के जीवन आध्यात्मिक, आधि भौतिक और आधि दैविक दुःखों से जर्जरित है-**''दुःखत्रयाभिघातात्.....''**।[vi] इन त्रिविध दुःखों से नामत परित्राण पाना नहीं बल्की ऐकान्तिक व आत्यन्तिक परित्राण पाना ही कैवल्य है-**''ऐकान्तिकमात्यन्तिकमुभयं कैवल्यमाप्नोति''।**[vii] सांख्य प्रोक्त कैवल्य औषधादि तथा वेदादि के कर्म काण्डों के द्वारा दुःखों से परित्राण विधि के न्याय सामयिक, क्षणस्थायी नहीं जो समय के साथ-साथ पुनः प्राप्त होता है-**''दृष्टे साऽपार्था'** ।[viii] वेदादि सम्मत यज्ञादि के द्वारा प्राप्त स्वर्गादि फल से भी कैवल्य अधिक उपादेय है क्योंकि सर्गादि अदृष्ट फल यज्ञादि कर्मकाण्डों के द्वारा अर्जित पूण्य से प्राप्त होता है जो समय के साथ साथ पूण्य क्षय होने से समाप्त हो जाता है और मनुष्य पुनः दुःखों से विजरित जीवन में पतित होता है-**''दृष्टवदानुश्रविकः स ह्यविशुद्धिक्षयातिशययुक्तः''।**[ix] वैदिक और लौकिक उपायों से दुःखों का निवारण सम्पूर्ण रुप से न होने से वह परिहार योग्य हैं-**''तद्विपरीतः श्रेयान्..''।**[x] सांख्य प्रोक्त कैवल्य सर्गादि से भिन्न है जो वैदिक यज्ञादि रुप लौकिक उपायों से नही अपितु सांख्य प्रोक्त तत्त्वों के ज्ञान से प्राप्त होता है-

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

''व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्''।[xi] ''ज्ञानेन चाऽपवर्गो....''।[xii] ''सम्यग् ज्ञानाधिगमात्.....''।[xiii] एवं तत्त्वाभ्यासात्.....अविपर्ययाद्विशुद्धं केवलमुत्पद्यते ज्ञानम्''।[xiv] पुरुषार्थं प्रति विमोचयत्येकरुपेण।[xv]

तत्त्व

बन्धन प्राप्त जीव के मुक्ति के लिए भारतीय दर्शन में कुछ ऐसे विषयों का उद्देश किया गया है जिसके स्वरुप ज्ञान तथा अनुभव के द्वारा अर्थात् श्रवण-मनन-निदिध्यासन के द्वारा मुक्ति प्राप्त होता हैं। ऐसे विषयों को भारतीय दर्शन के विभिन्न सम्प्रदायों ने **तत्त्व**, **पदार्थ**, **प्रमेय** आदि संज्ञाओं से अभिहित किया है।[xvi] सांख्य दृष्टि से मनुष्य के जीवन का दुःख स्वरुप बन्धन कोई शारीरिक बन्धन नहीं है अपितु यह आन्तरिक बन्धन है। ज्ञान की संकीर्णता तथा विषयों का स्वरुप ज्ञान का न होना ही बन्धन है-**''विपर्ययादिष्यते बन्धः''।**[xvii] सृष्टि के आदि काल से मनुष्य के जो जिज्ञासा था उन सभी जिज्ञासाओं का सठीक, निर्भूल, सत्य स्वरुप उत्तर का अवगत तथा उन तत्त्वो की अनुभूति के द्वारा कैवल्य प्राप्त होता है। मनुष्य के दृष्ट तथा अदृष्ट सभी प्रकार विषयों के सत्य स्वरुप उत्तर सांख्य दर्शन का विवेच्य विषय है-**''स्थित्युत्पत्तिप्रलयाश्चिन्त्यन्ते यत्र भूतानाम्''।**[xviii] मनुष्य के सभी मूर्त तथा अमूर्त जिज्ञासाओं का उपादान के रुप में सांख्य दर्शन में 25 तत्त्व स्वीकृत है। इस दर्शन का मानना है कि मनुष्य के सर्व प्रकार प्रश्नों का उत्तर इन 25 तत्त्वों के स्वरुप ज्ञान तथा श्रवन-मनन-निधिध्यासन के द्वारा प्राप्त होना सम्भव है। अनुरुप दृष्टिकोण से ही भारतीय अन्य दर्शन सम्प्रदायों में तत्त्वों के संख्या के विषय में तारतम्य दिखाई पड़ता है।[xix]

सांख्य सृष्टि के मूल के रुप में एक चेतन तत्त्व 'पुरुष' और एक अचेतन तत्त्व 'प्रकृति' तथा 'प्रधान' को मानता है। यद्यपि अव्यक्त स्वरुप प्रकृति का 23 परिणाम को भी तत्त्व के रुप में ग्रहण किया गया है। प्रकृति से बुद्धि, बुद्धि से अहंकार, अहंकार से एकादश इन्द्रिय और पंच तन्मात्र एवं पंच तन्मात्र से पंच महाभूत का सृष्टि होता है।[xx] व्यक्त 23 तत्त्व, 1 अव्यक्त और 1 'ज्ञ' पुरुष के विज्ञान से कैवल्य प्राप्ति होता है। प्रकृति व्यक्त स्वरुप जगतादि का मूल कारण है।[xxi] प्रीति, प्रकाश तथा लघु स्वभावा सत्त्वगुण[xxii], अप्रीति, प्रवृत्ति, चंचल स्वभावा रजः गुण[xxiii] और विशादात्मक, नियमन, गुरु स्वभावा तमः[xxiv] - गुणत्रय का साम्यावस्था है प्रकृति। प्रकृति अहेतुमद, नित्य, व्यापि, निस्क्रिय, एक, अनाश्रित, अवयव रहित,

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

स्वतन्त्र, त्रिगुण, अविवेकि, विषय, सामान्य, अचेतन और प्रसवधर्मी है।[xxv] उक्त स्वरुपा प्रकृति से विचित्र रुपी इस विश्व का निर्माण हुया है। प्रकृति का प्रथम परिणाम है बुद्धि/महान्। यह बुद्धि तत्त्व पुरुष के कैवल्य प्राप्ती में विशेष अन्यतम भूमिका पालन करता है।

सांख्य के दृष्टि से चेतन तत्त्व पुरुष साक्षी स्वरुप, उदासीन, माध्यस्थ, अकर्ता, द्रष्टा स्वरुप है।[xxvi] त्रिगुण रहित, संघात पदार्थों से भिन्न, अधिष्ठान स्वरुप भोक्तृभाव और कैवल्य में प्रवृत्ति के द्वारा पुरुष का अस्तित्त्व भी सिद्ध होता है।[xxvii] यह दर्शन **'जन्ममरणकरणानां... '**[xxviii] आदि प्रमाणों के द्वारा **पुरुष बहुत्त्ववाद** को भी सिद्ध करता है। पुरुष बहुत्त्ववाद सिद्ध करने के लिए जो जो प्रमाणों का आश्रय लिया गया है वे प्रमाणों के द्वारा ही **बुद्धि बहुत्त्ववाद** भी अनायास सिद्ध है। पुरुष विशेष के सिद्धि के द्वारा बुद्धि विशेष का भी सिद्धि हो जाता है-**''प्रति पुरुषविमोक्षार्थं....''**।[xxix] एक व अद्वितीय प्रकृति सृष्ट बुद्धि आदि व्यक्त पदार्थ असंख्य है-**''हेतुमद्..... अनेकम्.... व्यक्तं.....''**।[xxx] **''महदाद्या प्रकृतिविकृतयः सप्तः....''**।[xxxi] सत्त्वादि त्रिगुण के परिणाम बुद्धि सहित सभी वाह्य विषयों में असंख्यता, वैचित्र सृष्टि होता है-**''गुणपरिणामविशेषान्नानात्वं.....''**।[xxxii] विशेष बुद्धि समन्वित लिंग शरीर का संसरण होता है-**''संसरति निरुपभोगं भावैरधिवासितं लिंगम्''**।[xxxiii] उक्त सभी प्रमाणों के द्वारा बुद्धि बहुत्त्ववाद अनायास सिद्ध है। इस दर्शन में पुरुष का कैवल्य प्राप्ती में प्रकृति को सहायक रुप में दिखाया गया है परन्तु एक व अद्वितीय प्रकृति से विशेष एक पुरुष का कैवल्य प्राप्त होना सम्भव नहीं। प्रकृति स्वरुप सहित तत्कृत सृष्टि की दर्शन के द्वारा पुरुष विशेष का अपवर्ग साधन होता है परन्तु उक्त अपवर्ग साधन में प्रकृति कृत बुद्धि विशेष का मुख्य योगदान रहता है, क्योंकि प्रकृति कृत सृष्टि का स्वरुप ज्ञान प्राप्ति के लिए ज्ञान प्रक्रिया में बुद्धि का मुख्य योगदान रहता है। एतद् व्यतिरिक्त दृष्ट-अदृष्ट विषयों का ज्ञान उत्पादन क्षमता मुख्य रुप से प्रकृति में नहीं अपितु बुद्धि में है जो इस दर्शन प्रोक्त सत्कार्यवाद समर्थन करता है। अतएव विशेष एक बुद्धि ही विशेष एक पुरुष का कैवल्य प्राप्त करवाने में सहायक बन सकता है।

व्यक्त-अव्यक्त और ज्ञ के 'विज्ञानात्' अर्थात विशिष्ट ज्ञान से पुरुष का कैवल्य प्राप्त होता है। उक्त प्रकार विशिष्ट ज्ञान प्रमाणों के द्वारा ही सम्पन्न होता है। **प्रमेय अनेन इति प्रमाणम्** अर्थात् जिसके द्वारा 'प्रमेय'

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

'तत्त्वों' का स्वरुप ज्ञान होता है वह प्रमाण है। प्रमाणों के द्वारा ही सांख्य प्रोक्त सभी तत्त्वों का स्वरुप ज्ञान होता है जो कैवल्य प्राप्ती में साधन वनता है।

अत एव यह देखना है कि पुरुष विशेष के कैवल्य के साधन प्रमाणों में बुद्धि विशेष का क्या और कैसे भूमिका है?

सांख्य सभी प्रकार प्रमेय की सिद्धि के लिए तीन प्रकार प्रमाणों का स्वीकार किया है-**''त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेय सिद्धि प्रमाणाद्धिः''।**[xxxiv] अन्य दर्शनों में माने गए त्रिविधातिरिक्त प्रमाणों को सांख्य अपने त्रिविध प्रमाणों में ही समाहित किए है-**''सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्''।**[xxxv]

प्रमाणादि ज्ञान प्रकया में बुद्धि तत्त्व का भूमिकाः

सांख्य सम्मत कैवल्य प्राप्ती के लिए तथा इस दर्शन का मूलमन्त्र है- **''व्यक्ताव्यक्तज्ञविज्ञानात्''।** पुरुष बहुत्त्व के न्याय प्रकृति का प्रथम परिणाम स्वरुप बुद्धि भी असंख्य है। बुद्धि व्यक्त पदार्थ होने से हेतुमद्, अनित्य, अव्यापि, सक्रिय, अनेक, आश्रित, लिंग, सावयव, परतन्त्र, त्रिगुणी, अविवेकि, विषय, सामान्य, अचेतन और प्रसवधर्मी स्वभावा है।[xxxvi] बुद्धि का लक्षण में सांख्य कारिका में उल्लेख है-**''अध्यवसायः बुद्धिः''**[xxxvii] अर्थात् बुद्धि ज्ञान को निश्चयात्मक स्वरुप प्रदान करता है। इस दर्शन के अनुसार चक्षुरादि पांच ज्ञानेन्द्रिय[xxxviii] और वाकादि पांच कर्मेन्द्रिय[xxxix] अर्थात् दश वाह्य करण[xl] है एवं मन, अहंकार और बुद्धि- तीन अन्तःकरण[xli] है। दस प्रकार वाह्य करण दस वाह्य विषय[xlii] को ग्रहण करके अन्तःकरणों के निकट उपस्थापित करते है।[xliii] एकादश इन्द्रिय और अहंकार के द्वारा उपस्थापित विषयों के अध्यवसाय पूर्वक निश्चयात्मक ज्ञान बुद्धि में संगठित होता है। ज्ञानेन्द्रिय या कर्मेन्द्रिय, मन, अहंकार क्रमिक रुप से बुद्धि के समीप बाह्य विषय को उपस्थापित करते है।[xliv] जैसे चक्षुरादि ज्ञानेन्द्रिय अपने स्वविषय का विषयाकार को अन्तःकरण मन के समीप, तत्पश्चात् मन उस विषयाकार को अपर अन्तकरण अहंकार के समीप क्रमिक रुप से उपस्थापित करता है।[xlv] उक्त क्रमिक सन्निकर्ष से जो विषय वृत्ति बुद्धि में संगठित होता है वह प्रमा ज्ञान

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

है, यही सांख्य प्रोक्त **दृष्ट प्रमाण** है। दृष्ट प्रमाण के लक्षण में सांख्य कारिका में कहा गया है- **''प्रतिविषयाऽध्यवसायो दृष्टम्''**[xlvi]

अर्थात् विषय एवं इन्द्रिय का सन्निकर्ष से जो अध्यवसाय अर्थात् निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त होता है, उसे दृष्ट प्रमाण कहा जाता है। सांख्य मत के अनुसार वाह्य विषय सत्त्वादि त्रिगुणात्मक होता है।[xlvii] अतः जब ज्ञानेन्द्रिय त्रिगुणात्मक विषय की स्वरुप को बुद्धि के सामने उपस्थित करता है तव त्रिगुनात्मक बुद्धि के तमोगुण के आवरण का अभिभव होने पर अर्थात् सूक्षता प्राप्त होने पर सत्त्वगुण का जो परिणाम होता है उसे ही अध्यवसाय कहते है, जो दृष्ट प्रमाण है-**''विषयं विषयं प्रति वर्तते इति प्रतिविषयमिन्द्रियम.....प्रमाणम्''**[xlviii] इसी विषयाकार में पुरुष का प्रतिबिम्बित होने से पुरुष में जो बोध का सृजन होता है वह **'पौरुषेय वोध'** है। बुद्धि का ज्ञान स्वरुप छायाचित्र का बोध पुरुष को साक्षीरुप में होता है क्योकि सांख्य प्रोक्त पुरुष कैवल्य, माध्यस्थ, द्रष्टा, अकतृभाव स्वरुप होता है तथापि पुरुष के साथ सम्वन्ध रहने के कारण बुद्धि भी चेतन की तरह आचरण करने लगता है- **''तस्मात्तत्संयोगादचेतनं चेतनवदित लिंगम...''।**[xlix] इस प्रकार विम्बप्रतिविम्ब भाव हो अथवा केवल प्रतिविम्ब भाव हो, उससे पुरुष अपने आपको ज्ञानी मानने लगता है। यही **'पौरुषेय बोध'**[1] है। जैसे अचेतनवती घटाकार आकारित बुद्धि उस घटज्ञान को पुरुष पर उपचारित करने पर पुरुष अकर्ता होने पर भी आपने आपको 'घटऽहं जानामि' यह मानने लगता है एवं पुरुष आपने आपको ज्ञान के कर्ता समझने लगता है। त्रिगुणात्मक बुद्धि का द्विविध परिणाम होता है- सात्त्विक परिणाम और तामसिक परिणाम। रजः गुण इन दोनों परिणामों को परिचालित करता है। बुद्धि का सात्त्विक परिणाम में वह धर्म, ज्ञान, विराग और ऐश्वर्य स्वभावा होता है और इसी बुद्धि का तामसिक परिणाम से वह अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य और अनैश्वर्य स्वभावा होता है। जागतिक विषय के ज्ञान के लिए एकादश इन्द्रिय सहित अहंकार साधन तो बनते है परन्तु बुद्धि ही केवल मुख्य साधन बनते है। क्योंकि ज्ञान प्रक्रिया में अचेतन बुद्धि ही चेतन पुरुष के सव से समीप रहता है, दोनों में केवल सूक्ष्म एक व्यवधान रहता है-**''सर्वं प्रत्यपुभोगं यस्मात्पुरुषस्य साधयति बुद्धिः। सैव च विशिनष्टि पुनः प्रधानपुरुषान्तरं सूक्ष्मम्''।**[li]

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

यहां एक प्रश्न होता है कि सांसारिक जीवन में अभी जो ज्ञान हो रहा है, क्या यह स्वरुप ज्ञान नहीं है ?

उत्तर में बताया जाता है कि यह ज्ञान तो है परन्तु स्वरुप ज्ञान नहीं है, क्योंकि मनुष्य धर्मादि आचार के द्वारा युक्त न होने से वे ज्ञान तमस् प्रभवाच्छन्न होता है अर्थात् विपर्यय ज्ञान होता है, अत यह विषय का स्वरुप ज्ञान नहीं होता है। इन्द्रियाादि द्वारा उपस्थापित विषयों को बुद्धि के समीप प्रेरण के समय बुद्धि का सात्त्विक परिणाम होने से शुद्ध ज्ञान उत्पन्न होगा परन्तु अगर उस ज्ञान प्रक्रिया के समय बुद्धि का तामसिक परिणाम प्राप्त हो तो वो ज्ञान अवश्य ही अज्ञान स्वरुप होगा। बुद्धि ज्ञान और अज्ञान दोनों प्रकार ज्ञानों का सृष्टि कर्ता है। **''धर्मः अभ्युदयनिःश्रेयसहेतुः। तत्र यागदानाद्यनुष्ठानजनितो धर्मोऽभ्युदयहेतुः। अष्टांगयोगानुष्ठानजनितश्च निःश्रेयसहेतुः''।**[lii]

धर्म, ज्ञान, विराग और ऐश्वर्य- यह चार बुद्धि का सात्त्विक परिणाम है। ज्ञान प्रक्रिया में बुद्धि का सात्त्विक परिणाम के द्वारा शुद्ध ज्ञान का सृष्टि तभी सम्भव है यदि यह बुद्धि धर्म के द्वारा संस्कृत हो। यज्ञ, दान, अष्टांग योग आदि धर्म के अन्तर्गत आते है। धर्म से सर्वदा युक्त रहने से तद् अभ्युदय के द्वारा कैवल्य का मार्ग प्रशस्त होता है। धर्म के द्वारा युक्त होने से बुद्धि सर्वदा सात्त्विक प्रधान रहेगा और तत्सृष्ट ज्ञान सत्य स्वरुप, विषय स्वरुप ज्ञान होगा जो पुरुष के कैवल्य प्राप्ती के लिए साधन स्वरुप बनेगा।

अतिन्द्रियादि विषयों का ज्ञान अनुमान प्रमाण द्वारा होता है-**''अतीन्द्रियाणां प्रतीतिरनुमानात्''।**[liii] सांख्यकारिका में अनुमान प्रमाण के लक्षण में कहा गया है- **'तल्लिंगल्लिंगिपूर्वकम्'**[liv] अर्थात् लिंगज्ञान से लिंगी ज्ञान होता है और यह लिंग का ज्ञान दृष्ट प्रमाण से होता है।[lv] अतः अनुमान प्रमाण दृष्ट प्रमाण निर्भर होता है। कुछ ऐसे दृष्ट और अदृष्ट विषय होतें है जिसका ज्ञान दृष्ट तथा अनुमान प्रमाण के द्वारा सम्भव नही होता है वहां शब्द प्रमाण प्रयोग में आता है।[lvi] शब्द प्रमाण के लक्षण में कहा गया-**''आप्तश्रुतिराप्तवचनं तु''**[lvii] अर्थात् वेदादि श्रुति एवं आप्त पुरुष के वचन से उत्पन्न ज्ञान ही शब्द प्रमाण है। शब्द प्रमाण अनुमान प्रमाण निर्भर होता है। फिर भी श्रुतिरादि के शब्दों को विषय के रुप में निर्धारण करने से शब्द प्रमाण दृष्ट प्रमाण निर्भर भी सिद्ध होता है।[lviii] प्रसंगत उल्लेख्य, ज्ञान प्रक्रिया में बुद्धि का चार परिणाम भी होता है, जिसे **'बुद्धिसर्ग'** या **'प्रत्यय सर्ग'** कहा जाता है। बुद्धिसर्ग चतुष्टय-1. वियर्यय 2. अशक्ति 3. तुष्टि और 4.

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

सिद्धि।[lix] त्रिविध प्रमाण प्रकृया को विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि विषय का स्वरुप ज्ञान में चतुर्थ बुद्धि सर्ग 'सिद्धि' प्रारम्भिक तीन बुद्धि परिणाम को अभिभुत करके प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

निष्कर्षः

बुद्धि का त्रिगुणात्मक छायाचित्र द्रष्टुत्व, माध्यस्थ स्वरुप पुरुष में प्रतिबिम्बित होने पर पुरुष एवं बुद्धि तथा पुरुष प्रकृति से अलग है यह ज्ञान होता है, इसी को विवेकज्ञान या विवेकख्याति कहा जाता है।[lx] यह विवेकज्ञान से ही पुरुष को कैवल्य प्राप्त होता है। आदिकारण प्रकृति ने पुरुष के मोक्ष के लिए मानवशरीरादि सहित शब्द-जगतादि का सृष्टि करने पर भी विशिष्ट पुरुष को मोक्ष प्राप्त करवाने के कारण नहीं वनते, अपितु बुद्धि ही विशिष्ट पुरुष का शब्दादिविषयोपलब्धिरुप भोग और गुणपुरुषान्तरोपलब्धिरुप मोक्ष प्राप्त करवाने में मुख्य कारण बनता है, और प्रकृति बनती है निमित्त्व कारण।[lxi] **यत्तसर्गादौ सूक्ष्मं शरीरं.....तदेव सूक्ष्मशरीरमुत्पन्ने ज्ञाने त्रिधा बन्धान्मुच्यते।[lxii] ''ननु च सचेतनस्य बुद्धिपूर्विका प्रवृत्तिर्भवति...''।[lxiii]**

पाद टीका

---

[i] सांख्य कारिका -69

[ii] डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्र,भारतीय दर्शन,चौखाम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी,2019
और देखें Darani kanta das,The Indian Concept of Moksa:Its Relevance to the Present Day,Dept. of Philosophy,University of North Bengal,2005

[iii] Darani kanta das,The Indian Concept of Moksa:Its Relevance to the present Day,Dept. of Philosophy,University of North Bengal,2005

[iv] समरेन्द्र भट्टाचार्य, भारतीय दर्शन,वुक सिन्डिकेट प्रा लिमिटेड,कोलकाता,2013।

[v] सांख्य कारिका -55. नरहरि व्याख्या 1,

[vi] सांख्य कारिका-1, और देखें-माठर वृत्ति न 1, गौड़भाष्य 1, जयमगंला 1, तत्त्वकौमुदी 1, अशोकदा व्याख्या 1, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 1, युक्तिदीपिका 1

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

[vii] सांख्य कारिका-68, और देखें-माठर वृत्ति 68, गौड़भाष्य 68, जयमगंला 68, तत्त्वकौमुदी 68, नरहरी व्याख्या 68, अशोकदा व्याख्या 68, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 68

[viii] सांख्य कारिका-1, और देखें-माठर वृत्ति 1, गौड़भाष्य 1, जयमगंला 1, तत्त्वकौमुदी 1, युक्तिदीपिका 1, अशोकदा व्याख्या 1, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 1

[ix] सांख्य कारिका-2, और देखें-माठर वृत्ति 2, गौड़भाष्य 2, जयमगंला 2, तत्त्वकौमुदी 2, युक्तिदीपिका 2, नरहरि व्याख्या 2, अशोकदा व्याख्या 2,विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 2

[x] वही

[xi] वही

[xii] सांख्य कारिका-44, और देखें-माठर वृत्ति 44, गौड़भाष्य 44, जयमगंला 44, तत्त्वकौमुदी 44, युक्तिदीपिका 44, अशोकदा व्याख्या 44, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 44

[xiii] सांख्य कारिका-67, और देखें-माठर वृत्ति 67, गौड़भाष्य 67, जयमगंला 67, तत्त्वकौमुदी 67, युक्तिदीपिका 67, नरहरि व्याख्या 67, अशोकदा व्याख्या 67, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 67

[xiv] सांख्य कारिका-64, और देखें-माठर वृत्ति 64, गौड़भाष्य 64, जयमगंला 64, तत्त्वकौमुदी 64, युक्तिदीपिका 64, नरहरि व्याख्या 64, अशोकदा व्याख्या 64, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 64

[xv] सांख्य कारिका-63, और देखें-माठर वृत्ति 63, गौड़भाष्य 63, जयमगंला 63, तत्त्वकौमुदी 63, युक्तिदीपिका 63, नरहरि व्याख्या 63, अशोकदा व्याख्या 63, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 63

[xvi] समरेन्द्र भट्टाचार्य, भारतीय दर्शन,वुक सिन्डिकेट प्रा लिमिटेड,कोलकाता,2013, और देखें डॉ॰ पीयूषकान्ति घोष और अध्यापक प्रमोदबन्धु सेनगुप्त,भारतीय दर्शन, व्यानार्जी पावलिकेशन,कोलकाता,2002।

[xvii] सांख्य कारिका-44, और देखें-माठर वृत्ति 44, गौड़भाष्य 44, जयमगंला 44, तत्त्वकौमुदी 44, युक्तिदीपिका 44, अशोकदा व्याख्या 44, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 44

[xviii] सांख्य कारिका-69, और देखें-माठर वृत्ति 69, गौड़भाष्य 69, जयमगंला 69, तत्त्वकौमुदी 69, युक्तिदीपिका 69, अशोकदा व्याख्या 69, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 69

[xix] डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्र,भारतीय दर्शन,चौखाम्बा सुरभारती प्रकाशन,वाराणसी,2019 और देखें समरेन्द्र भट्टाचार्य, भारतीय दर्शन,वुक सिन्डिकेट प्रा लिमिटेड,कोलकाता,2013 और देखें डॉ. उमेश मिश्र,भारतीय दर्शन,प्रकाशन ब्यूरो,सूचना विभाग,उत्तर प्रदेश,1957

[xx] सांख्य कारिका-3,22 और देखें-माठर वृत्ति 3,22 गौड़भाष्य 3,22 जयमगंला 3,22 तत्त्वकौमुदी 3,22, युक्तिदीपिका 3,22, अशोकदा व्याख्या 3,22 विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 3,22

[xxi] सांख्य कारिका-3,14,15,16 और देखें-माठर वृत्ति 3,14,15,16 गौड़भाष्य 3,14,15,16,

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

जयमगंला 3,14,15,16, तत्त्वकौमुदी 3,14,15,16, युक्तिदीपिका 3,14,15,16, अशोकदा व्याख्या 3,14,15,16, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 3,14,15,16

[xxii] सांख्य कारिका-12,13 और देखें-माठर वृत्ति 12,13 गौड़भाष्य 12,13 जयमगंला 12,13 तत्त्वकौमुदी 12,13, युक्तिदीपिका12,13, अशोकदा व्याख्या 12,13 विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 12,13

[xxiii] वही

[xxiv] वही

[xxv] सांख्य कारिका-10,11 और देखें-माठर वृत्ति 10,11 गौड़भाष्य 10,11 जयमगंला 10,11 तत्त्वकौमुदी 10,11, युक्तिदीपिका 10,11, अशोकदा व्याख्या 10,11 विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 10,11, नरहरि व्याख्या 10,11

[xxvi] सांख्य कारिका-19, और देखें-माठर वृत्ति 19, गौड़भाष्य 19, जयमगंला 19, तत्त्वकौमुदी 19, युक्तिदीपिका 19, अशोकदा व्याख्या 19, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 19, नरहरि व्याख्या 19

[xxvii] सांख्य कारिका-17, और देखें-माठर वृत्ति 17, गौड़भाष्य 17, जयमगंला 17, तत्त्वकौमुदी 17, युक्तिदीपिका 17, अशोकदा व्याख्या 17, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 17, नरहरि व्याख्या 17

[xxviii] सांख्य कारिका-18, और देखें-माठर वृत्ति 18, गौड़भाष्य 18, जयमगंला 18, तत्त्वकौमुदी 18, युक्तिदीपिका 18, अशोकदा व्याख्या 18, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 18, नरहरि व्याख्या 18

[xxix] सांख्य कारिका-56, और देखें-माठर वृत्ति 58, गौड़भाष्य 56, जयमगंला 56, तत्त्वकौमुदी 56, युक्तिदीपिका 56, अशोकदा व्याख्या 56, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 56, नरहरि व्याख्या 56

[xxx] सांख्य कारिका-10, और देखें-माठर वृत्ति 10, गौड़भाष्य 10, जयमगंला 10, तत्त्वकौमुदी 10, युक्तिदीपिका 10, नरहरि व्याख्या 10, अशोकदा व्याख्या 10, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 10

[xxxi] सांख्य कारिका-3, और देखें-माठर वृत्ति 3, गौड़भाष्य 3, जयमगंला 3, तत्त्वकौमुदी 3, युक्तिदीपिका 3, नरहरि व्याख्या 3, अशोकदा व्याख्या 3, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 3

[xxxii] सांख्य कारिका-27, और देखें-माठर वृत्ति 27, गौड़भाष्य 27, जयमगंला 27, तत्त्वकौमुदी 27, युक्तिदीपिका 27, अशोकदा व्याख्या 27, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 27, नरहरि व्याख्या 27

[xxxiii] सांख्य कारिका-40, और देखें-माठर वृत्ति 40, गौड़भाष्य 40, जयमगंला 40, तत्त्वकौमुदी 40, युक्तिदीपिका 40, अशोकदा व्याख्या 40, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 40, नरहरि व्याख्या 40

[xxxiv] सांख्य कारिका-4, और देखें-माठर वृत्ति 4, गौड़भाष्य 4, जयमगंला 4, तत्त्वकौमुदी 4, युक्तिदीपिका 4, नरहरि व्याख्या 4, अशोकदा व्याख्या 4, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 4

[xxxv] सांख्य कारिका-4, और देखें-माठर वृत्ति 4, गौड़भाष्य 4, जयमगंला 4, तत्त्वकौमुदी 4, युक्तिदीपिका 4, नरहरि व्याख्या 4, अशोकदा व्याख्या 4, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 4

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

[xxxvi] सांख्य कारिका-10,11 और देखें-माठर वृत्ति 10,11 गौड़भाष्य 10,11 जयमगंला 10,11 तत्त्वकौमुदी 10,11, युक्तिदीपिका 10,11, नरहरि व्याख्या 10,11 अशोकदा व्याख्या 10,11, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 10,11

[xxxvii] सांख्य कारिका-23

[xxxviii] सांख्य कारिका-26, और देखें-माठर वृत्ति 26, गौड़भाष्य 26, जयमगंला 26, तत्त्वकौमुदी 26, युक्तिदीपिका 26, अशोकदा व्याख्या 26, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 26, नरहरि व्याख्या 26

[xxxix] वही

[xl] सांख्य कारिका-33, और देखें-माठर वृत्ति 33, गौड़भाष्य 33, जयमगंला 33, तत्त्वकौमुदी 33, युक्तिदीपिका 33, अशोकदा व्याख्या 33, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 33, नरहरि व्याख्या 33

[xli] वही

[xlii] सांख्य कारिका-28, और देखें-माठर वृत्ति 28, गौड़भाष्य 28, जयमगंला 28, तत्त्वकौमुदी 28, युक्तिदीपिका 28, अशोकदा व्याख्या 28, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 28, नरहरि व्याख्या 28

[xliii] सांख्य कारिका-35, और देखें-माठर वृत्ति 35, गौड़भाष्य 35, जयमगंला 35, तत्त्वकौमुदी 35, युक्तिदीपिका 35, नरहरि व्याख्या 35, अशोकदा व्याख्या 35, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 35

[xliv] सांख्य कारिका-36, और देखें-माठर वृत्ति 36, गौड़भाष्य 36, जयमगंला 36, तत्त्वकौमुदी 36, युक्तिदीपिका 36, नरहरि व्याख्या 36, अशोकदा व्याख्या 36, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 36

[xlv] सांख्य कारिका-30, और देखें-माठर वृत्ति 30, गौड़भाष्य 30, जयमगंला 30, तत्त्वकौमुदी 30, नरहरि व्याख्या 30, अशोकदा व्याख्या 30, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 30

[xlvi] सांख्य कारिका-5, और देखें-माठर वृत्ति 5, गौड़भाष्य 5, जयमगंला 5, युक्तिदीपिका 5, अशोकदा व्याख्या 5, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 5, नरहरि व्याख्या 5

[xlvii] सांख्य कारिका-16,14 और देखें-माठर वृत्ति 16,14 गौड़भाष्य 16,14 जयमगंला 16,14 तत्त्वकौमुदी 16,14, युक्तिदीपिका 16,14, अशोकदा व्याख्या 16,14 विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 16,14 नरहरि व्याख्या 16,14

[xlviii] तत्त्वकौमुदी 5,

[xlix] सांख्य कारिका-20, और देखें-माठर वृत्ति 20, गौड़भाष्य 20, जयमगंला 20, तत्त्वकौमुदी 20, युक्तिदीपिका 20, नरहरि व्याख्या 20, अशोकदा व्याख्या 20, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 20

[l] तत्त्वकौमुदी 5,

[li] सांख्य कारिका-37, और देखें-माठर वृत्ति 37, गौड़भाष्य 37, जयमगंला 37, तत्त्वकौमुदी 37, युक्तिदीपिका 37, नरहरि व्याख्या 37, अशोकदा व्याख्या 37, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 37

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

[lii] तत्त्वकौमुदी 23

[liii] सांख्य कारिका-6, और देखें-माठर वृत्ति 6, गौड़भाष्य 6, जयमगंला 6, तत्त्वकौमुदी 6, युक्तिदीपिका 6, नरहरि व्याख्या 6, अशोकदा व्याख्या 6, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 6

[liv] सांख्यकारिका-5

[lv] माठर वृत्ति 5, गौड़भाष्य 5, जयमगंला 5, तत्त्वकौमुदी 5, युक्तिदीपिका 5, नरहरि व्याख्या 5, अशोकदा व्याख्या 5, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 5

[lvi] सांख्य कारिका-6, और देखें-माठर वृत्ति 6, गौड़भाष्य 6, जयमगंला 6, तत्त्वकौमुदी 6, युक्तिदीपिका 6, नरहरि व्याख्या 6, अशोकदा व्याख्या 6, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 6

[lvii] सांख्यकारिका-5

[lviii] माठर वृत्ति 5, गौड़भाष्य 5, जयमगंला 5, तत्त्वकौमुदी 5, युक्तिदीपिका 5,

[lix] सांख्य कारिका-46, और देखें-माठर वृत्ति 46, गौड़भाष्य 46, जयमगंला 46, तत्त्वकौमुदी 46, युक्तिदीपिका 46, नरहरि व्याख्या 46, अशोकदा व्याख्या 46, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 46

[lx] सांख्य कारिका-61,64 और देखें-माठर वृत्ति 61,64 गौड़भाष्य 61,64 जयमगंला 61,64 तत्त्वकौमुदी 61,64, युक्तिदीपिका 61,64 नरहरि व्याख्या 61,64 अशोकदा व्याख्या 61,64, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 61,64

[lxi] माठर वृत्ति 56,58,60,61 गौड़भाष्य 56,58,60,61 जयमगंला 56,60 तत्त्वकौमुदी नरहरि व्याख्या 56, अशोकदा व्याख्या 56, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 56

[lxii] माठर वृत्ति 62, गौड़भाष्य 62 जयमगंला 62, नरहरि व्याख्या 62, अशोकदा व्याख्या 62, विद्वत्त्वोषिणी व्याख्या 62,

[lxiii] जयमगंला 57

संदर्भ ग्रंथ सूची

- शर्मा आचार्य,पं. श्रीराम,सांख्य दर्शन,बरेली,संस्कृति संस्थान,२००२
- षडंगी,डॉ सुधांशु कुमार,सांख्य कारिका,बनारसी,भारतीय विद्या प्रकाशन, २०१०
- पाण्डेय,डॉ दीनानाथ,सांख्य तत्त्व मनोरोमा,बाराणसी,मनोरमा प्रकाशन, १९९७
- त्रिपाठी,आचार्य श्री केदारनाथ,युक्तिदीपिका,बाराणसी,सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, २०१७
- शास्त्री,डॉ राकेश,सांख्य कारिका,दिल्ली,संस्कृत ग्रंथागार,१९९८

SIDDHANTA'S INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN ARTS & HUMANITIES
An International Peer Reviewed, Refereed Journal
Vol. 2, Issue 2, November-December 2024 Impact Factor : 6.8 ISSN(O) : 2584-2692
Available online : https://sijarah.com/

- हाल,फिट्ज एडवर्ड,सांख्य प्रवचन भाष्यम्,कलकत्ता,द्या बैप्टिस्ट मिशन प्रेस, १८५६
- झा,डॉ राम नाथ,सांख्य दर्शन,दिल्ली,विद्या निधिप्रकाशन,
- भट्टाचार्य,रामशंकर,सांख्यतत्त्वकौमुदी,दिल्ली,मोतीलाल बनरसीदास,१९७६,
- मिश्र,डॉ उमेश,भारतीय दर्शन,उत्तर प्रदेश,प्रकाशन ब्योरों,सूचना बिभाग, १९५७
- मिश्र,डॉ आद्या प्रसाद,सांख्यतत्त्वकौमुदी,एलाहाबाद,प्रेम प्रकाशन,१९६९
- पांडे,जनार्दन,सांख्य दर्शनम,दिल्ली,मोतीलाल बनरसीदास,१९८९
- भट्टाचार्य,रामशंकर,सांख्य सार,दिल्ली,भारतीय विद्या प्रकाशन,१९७८
- कुमार,डॉ शिव,सांख्य योग इपिस्टमलजी,दिल्ली,ईस्टर्न बुक लिंकर्स
- गोस्वामी,श्री नारायण चंद्र,सांख्यतत्त्व कौमुदी,कलकता,संस्कृत पुस्तक भंडार,२०१६
- पाल,बिपड़भाँजन,सांख्य कारिका,कोलकाता,सदेश,१४१७ बंगबद
- शास्त्री,आचार्य उदयबीर,सांख्य दर्शनम्,दिल्ली,बिजय कुमार हसानंद,२०२१
- मिश्र,जगदीश चंद्र,भारतीय दर्शन,बाराणसी,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,२०१९
- षडंगी,डॉ सुधांशु कुमार,सांख्य कारिका,चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन,२०१६